प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

'द स्प्रिंग थॉट ऑफ आचार्य महाप्रज्ञ' पुस्तक का विमोचन

आचार्य महाप्रज्ञ मनस्वी संत थे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 2 जुलाई , 2010

आचार्य महाप्रज्ञ एक मनस्वी ज्ञानी संत थे। उनके कितने ग्रंथ लेखन के विषय बन गये। उनके जीवन का बड़ा हिस्सा ज्ञान की आराधना में बीता।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने 'द स्प्रिंग थॉट ऑफ आचार्य महाप्रज्ञ' पुस्तक के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने पुस्तक के संदर्भ में कहा कि प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को परिभाषित किया गया है। ऐसा लगता है कि बिखरे मोतियों को दक्षता के साथ माला में पिरो दिया गया है। उन्होंने कहा कि साहित्य में शब्दों का समूह होता है। शब्द अपने आप में जड़ होते हैं। जड़ का विशेष महत्व होता है, उन्होंने कहा कि वह लेखन उत्कृष्ट होता है जो मौलिक होता है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि उन विचारों का महत्व होता है जो व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाते हैं, आचार्य महाप्रज्ञजी के विचारों ने विद्वत जगत को प्रभावित किया है। उनके विचारों में यथार्थता एवं अनुभूति है, जिससे व्यक्ति समाधान प्राप्त करता है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य प्राणवान साहित्य है। रेल्वे बॉर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं जाने-माने गांधीविद् डॉ. वाई.पी. आनन्द, केरल सररकार का प्रिंसीपल सेक्रेट्री ए.के. दुबे, प्रो. के.सी. अग्निहोत्री ने आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा प्रयोग में लिए गये अनेकांत दर्शन एवं अहिंसा दर्शन को युग की समस्याओं का समाधान करने वाला बताया।

इससे पूर्व पुस्तक के लेखक प्रो. बच्छराज दुगड़ एवं गांधी म्यूजियम दिल्ली के डायरेक्टर डॉ. अनिलदत्त मिश्रा ने पुस्तक का परिचय दते हुए विमोचन हेतु आचार्य महाप्रज्ञ को प्रथम प्रति समर्पित की। दोनों लेखकों ने आशा व्यक्त की कि आचार्य महाप्रज्ञ के विचार युवाओं के युवा विचारों को पथ दिखायेंगे एवं लक्ष्य प्राप्त करने में योगभूत बनेंगे। कार्यक्रम का संचालन वंदना कुण्डलिया ने किया।

– **शीतल बरड़िया**
मीडिया संयोजक